गुरु नानक - सबद ७९

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५५

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥
बिनु अभ सबद न माँजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥
मुँधे गुणहीणी सुखु केहि ॥
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाँढी झूरेइ ॥
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥
केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥
वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥
बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥
सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥

हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥

सार: सत्य हमें नैतिकता की ओर ले जाता है, हमारे अंतर्मन को प्रकाश से आलोकित करता है। सृष्टि के अस्तित्व में हर चीज़ सत्य की अभिव्यक्ति है, समुद्र, आकाश और पहाड़, अपने अस्तित्व से ही सत्य को प्रकट करते हैं। सत्य के साथ जीना हमारे मन को प्राकृतिक व्यवस्था के साथ जोड़ता है जिससे अस्तित्व और कर्म के बीच सामंजस्य स्थापित होता है। यह संतुलन हमें स्वार्थ से ऊपर उठने और सभी चीज़ों के सार से जुड़ने में मदद करता है। अंततः, सत्य और नैतिकता एक हो जाते हैं और यह प्रकट करते हैं कि आत्मा, कर्म और मूल स्रोत एक अखंड वास्तविकता के परस्पर जुड़े हुए रूप हैं।

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥
जब मन भ्रष्ट होता है तब शरीर को अपवित्र माना जा सकता है और वाणी कपटी हो जाती है। यह दर्शाता है कि सत्य से जुड़ाव के बिना, जीवन का हर पहलू, विचारों से लेकर कर्मों और वचनों तक, छल से भरा होता है।

मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥
दिखावा झूठा और वाणी बेईमान है। शुद्ध होने के लिए कौन से कर्म किए जा सकते हैं।

बिनु अभ सबद न माँजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥
अंतर्दृष्टि के शब्दों के सार के बिना, शुद्धि असंभव है। ईमानदारी से प्रामाणिकता प्राप्त की जा सकती है। यह प्रतीक है कि सत्य ही सत्य की ओर ले जा सकता है और आत्मा को शुद्ध कर सकता है। (१)

मुँधे गुणहीणी सुखु केहि ॥
गुणहीन होकर कौन-सा सुख संभव है।

पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥

यदि सत्य, अंतर्दृष्टि और सद्भाव के प्रति प्रेम हो तब ही प्रियतम से मिलन आनंदमयी होगा। यह दर्शाता है कि सत्यनिष्ठा के मार्गदर्शन में साधक को शांति से मिलन प्राप्त होता है। (१)(विराम)

पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाँढी झूरेइ ॥

यदि प्रियतम दूर प्रतीत हो तब साथी की लालसा शोकमय कर देती है। यह दर्शाता है कि आंतरिक स्व से दूरी दुख और वियोग एक कष्टदायक खालीपन देते हैं।

जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥

सतही पानी में छटपटाती मछली की तरह, वह पीड़ा में विलाप करती है।

पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥

प्रियतम का होना आनंददायक होता है और जब हम स्वयं उसे अनुग्रहपूर्वक गले लगाते हैं तब शांति मिलती है। यह प्रकाश डालता है कि जब हम अपने जीवन को सार्वभौमिक ऊर्जा की सर्वव्यापकता के साथ जोड़ लेते हैं तब स्वाभाविक सहज रूप से तृप्ति मिलती है। (२)

पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥

मित्रों और साथियों के बीच प्रियतम के मूल्य को व्यक्त करें। यह प्रकाश डालता है कि साथी साधकों के साथ सार्थक संवाद सर्वव्यापी ऊर्जा के सार की हमारी समझ को गहरा करता है।

तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥

तन सुखदायी एवं मन जिज्ञासु है और जब हम भक्तिमय प्रेम में डूब जाते हैं तब यह हमें आनंद की स्थिति में ले जाता है। यह प्रकाश डालता है कि जब जागरूकता, कर्म और भक्ति एक साथ आते हैं तब शरीर और मन सामंजस्य में एक हो जाते हैं।

सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि हमें सद्गुणी बनाती है जिससे हम अपने प्रियतम, सर्वव्यापी शक्ति को उसकी विशेषताओं के लिए सच्चे अर्थ में सम्मान कर पाते हैं। (३)

कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥
यदि व्यक्ति के कर्म भ्रष्ट हैं और अवगुणों से भरे हैं तब वह व्यर्थ हैं। यह याद दिलाता है कि आत्मचिंतन के बिना की गई भूल-गलतियां अर्थपूर्ण प्रगति को सीमित कर देती हैं।

ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥
ससुराल में शांति नहीं मिलती, झूठ और मूल्यहीनता खाती रहती है। यह रूपक एक छलपूर्ण मानसिकता के दुष्परिणामों को दर्शाता है जो अपने भीतरी सत्य को अनदेखा कर पूर्णता की तलाश करता है।

आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥
प्रिय द्वारा त्याग दिए जाने और भुला दिए जाने पर आना-जाना बोझिल हो जाता है। यह ऐसे जीवन का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सत्यनिष्ठा और आत्म-जागरूकता का अभाव है जो हमें प्रगति और असफलताओं के चक्र में फँसाता है। (४)

पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥
प्रियतम का जीवनसाथी गुणी है लेकिन अगर सो रहा हो तो उसका क्या मूल्य है? यह दर्शाता है कि सहज जागरूकता होने के बावजूद, उसके सार से संपर्क खोने से सभी अनुभव फीके पड़ जाते हैं।

पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥
साथी प्रियतम के लिए व्यर्थ हो जाता है जब वह उद्देश्यहीन और विवाद उत्पन्न करने वाले शब्द बोलता है।

दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥
जब विवेक का परित्याग कर दिया जाता है द्वैत के सुखों की खोज में तब व्यक्ति को विवेक का समर्थन नहीं मिलता। इससे पता चलता है कि विरोधाभासी विचार आंतरिक सत्य को धुंधला कर देते हैं। (५)

पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥
विद्वान शास्त्रों का अध्ययन करते हैं परंतु उनके सार को नहीं समझ पाते। इससे पता चलता है कि जब तक ज्ञान को व्यवहार में नहीं उतारा जाता उसका कोई वास्तविक मूल्य नहीं होता।

अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥
वह दूसरों को सलाह देते हैं परंतु माया का व्यापार चलता रहता है। यह दिखाता है कि जब सजगता और ईमानदारी की कमी होती है तब ज्ञान और मार्गदर्शन भी भ्रामक हो सकते हैं।

कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥
संसार मिथ्या-झूठ में भटकता है, ज्ञान की अंतर्दृष्टि से जीने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। कर्म के बिना शब्द भ्रम पैदा करते हैं, उनका व्यावहारिक अभ्यास करने से ही उनका सही अर्थ प्रकट होता है। (६)

केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥
अनेक विद्वान और ज्योतिषियों ने धार्मिक ग्रंथों पर विचार-विमर्श किया है।

वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥
विवाद और मतभेदों के माध्यम से लोग स्वयं को ऊँचा दिखाना चाहते हैं लेकिन यह चर्चाएँ क्षणिक हैं। हालाँकि तर्क भले ही रोचक हो सकते हैं लेकिन वह स्थायी ज्ञान या वास्तविक शांति प्रदान नहीं करते।

बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥
अज्ञान से जागरूकता की ओर ले जाने वाले ज्ञान के बिना, हमारे कर्मों से मुक्ति नहीं मिल सकती, चाहे कोई बोले, सुने, घोषणा करे। आलोचनात्मक सोच से जागृति उत्पन्न होती है, कर्मकांडों या बाहरी प्रयासों से नहीं। (७)

सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥
हर कोई स्वयं को गुणी समझता है लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझमें कोई गुण नहीं। यह विनम्रता को दर्शाता है, अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना, आत्मविकास और प्रगति को बढ़ावा देने के लिए।

हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा, जो पुरुष और स्त्री दोनों गुणों को समेटे हुए है, मनोहर है और मेरे लिए, ऐसा दिव्य सार सुखद है।

नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥
नानक कहते हैं कि आत्मबोध के माध्यम से एकत्व की प्राप्ति होती है और तब कोई विभाजन की स्थिति नहीं रहती। यह जागरूकता का प्रतिनिधित्व करता है, द्वैत का भ्रम मिट जाता है और एकत्व ही हमारी सच्ची प्रकृति के रूप में प्रकट होता है। (८)(५)

तत्त्व: गुरु नानक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करना पराजय नहीं बल्कि साहस का काम है। यह आत्म-बोध का द्वार खोलता है और हमें पूर्णता के भ्रम से मुक्त करता है। जब हम अपनी कमियों को ईमानदारी से स्वीकार करते हैं तब हम विकास और परिवर्तन के लिए जगह बनाते हैं। जागरूकता इनकार की जगह ले लेती है और विनम्रता अभिमान की जगह ले लेती है। यह सौम्य स्वीकृति कमज़ोरी को एक शिक्षक में बदल देती है जो हमें संतुलन और आंतरिक शक्ति की ओर ले जाती है। वास्तव में, अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करना सृष्टि के एकत्व के साथ पूर्ण होने की तरफ पहला कदम है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com